



जापान में संस्कृत का प्रभाव: एक अध्ययन

सुशान्त राय

शोधछात्र, संस्कृत एवं प्राच्यविद्या अध्ययन संस्थान

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-110067, भारत

सारांश-

जापान में संस्कृत का प्रभाव का अध्ययन एक विशेष विषय है। जापान में संस्कृत का प्रभाव मुख्यतः बौद्ध धर्म के माध्यम से हुआ है। संस्कृत ने जापान की भाषा, सांस्कृतिक परम्पराओं, कलात्मक अभिव्यक्तियों, दार्शनिक विचारों और साहित्यिक धारा को गहराई से प्रभावित किया है। जापानी भाषा में संस्कृत शब्दों का प्रभाव देखा जाता है। अनेक संस्कृत बौद्ध ग्रन्थों का अनुवाद जापानी भाषा में किया गया। संस्कृत की हजारों पाण्डुलिपियों का अनुवाद जापान की कोथाइनिज, खोतानी, तोखारियन, उइगुर और सोग्डियन आदि जैसे कई भाषाओं में किया गया है। अनेक जापानी विद्वानों ने संस्कृत ग्रन्थों का अध्ययन और अनुवाद किया है। जापान के विश्वविद्यालयों में संस्कृत एक शैक्षिक विषय के रूप में पढ़ाया जाता रहा, जिसके फलस्वरूप, संस्कृत के अध्ययन और अनुसंधान की एक समृद्ध परम्परा जापान में देखी जाती है। इस शोध पत्र में मैंने जापान में संस्कृत के इस प्रकार के प्रभावों का विवेचन और विश्लेषण किया है।

कूटशब्द- जापान, संस्कृत, सिद्धम या सिधम्म, पाण्डुलिपि, जापानी साहित्य और बौद्ध साहित्य।

प्रस्तावना-

जापान में बौद्ध धर्म तथा दर्शन के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ संस्कृत अध्ययन की परम्परा की शुरुआत हुई थी। यह संस्कृत भाषा बौद्ध दर्शन, कला और विचार के प्रसार के साथ भारत की सीमाओं को पार कर मध्य एशिया और चीन होते हुये जापान पहुँची। जापान में संस्कृत भाषा के प्रसार-प्रचार धार्मिक कार्य, बौद्ध ग्रन्थों के अध्ययन तथा अनुवाद के उद्देश्य से हुआ था। बौद्ध भिक्षुओं, विद्वानों, पण्डितों तथा श्रद्धालुओं ने संस्कृत को न केवल संचार के माध्यम के रूप में बल्कि एक दिव्य भाषा के रूप में भी आगे बढ़ाया है। इनके यात्रा विहार के माध्यम से ही संस्कृत भाषा एक जगह से दूसरी जगह प्रचारित हुई है। जापान में पारलौकिक मूल्यों की खोज में सम्राटों ने राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के लिए संस्कृत में लिखे गए सूत्रों की परम्परा को अपनाया। आज धरणी, तन्त्र, सूत्र और अन्य ग्रन्थों से युक्त संस्कृत साहित्य का एक समृद्ध साहित्यिक सम्पत्ति जापान में लगभग १४०० वर्षों से संरक्षित किया हुआ है। अपने अधिकांश

इतिहास में जापानी साहित्य अपने प्रतिवेशी देशों (विशेष रूप से चीन और भारत) के साहित्य के साथ सांस्कृतिक सम्पर्क से प्रभावित रहा है। जापानी साहित्य पर संस्कृत साहित्य का बहुत गहरा प्रभाव रहा है। जापान में बौद्ध धर्म के आगमन के साथ ही संस्कृत साहित्य का प्रभाव भी आया है। जापानी साहित्य में संस्कृत के कई शब्दों और अवधारणाओं का उपयोग हुआ है।

सन् ५९३ ई. में जापान का राज्यभार राजकुमार शोतोकू ताइशी (Shōtoku Taishi) ने सम्भाला था, जो अपने आदर्शों एवं धर्मप्रचार के कारण जापान के अशोक कहलाये गये। उन्होंने भगवान् बुद्ध के 'बहुजनहिताय-बहुजनसुखाय' विचारधारा से अभिभूत होकर छठी शताब्दी ईस्वी में १७ अनुच्छेदों में जापान का पहला संविधान तैयार किया, जिसमें त्रिरत्न, बुद्ध, धर्म और संघ एक मूलभूत कारक थे। वर्तमान में जापान के होर्यूजी मन्दिर के संग्रहालय में यह संविधान संरक्षित है। उन्होंने स्वयं सद्धर्मपुण्डरिक-सूत्र, श्रीमाला-देवी-सिंहनाद-सूत्र और विमलकीर्ति-निर्देश-सूत्र पर भाष्य लिखे और व्याख्यान दिए, उन्हें आज तक जापानियों के दैनिक पाठ में सुना जा सकता है। यह पहला अवसर था जब संस्कृत पाण्डुलिपियाँ भाषा में आईं।¹

सिद्धम या सिधम्म लिपि का परिचय²-

ब्राह्मी लिपि का ही एक रूप - सिद्धम या सिधम्म है, जो नागरी लिपि से समरूपता रखती है। जापान में इस लिपि को 'शितेन' या 'बोनजी' कहा जाता है। जापान में इस लिपि की लोकप्रियता का मुख्य कारण है- मन्त्रयान बौद्ध धर्म के उदय। धरणियों, मन्त्रों और बीजाक्षरों को लिखने के लिए इस लिपि का उपयोग किया जाता है। महान् बौद्ध भिक्षु विद्वान् कोबो दाशी ने जापान में सर्वप्रथम सिद्धम् के रूप में ज्ञात संस्कृत अक्षरों का अध्ययन शुरू किया था। इनका प्रयोग उत्तरी भारत में छठी से बारहवीं शताब्दी ई. तक उत्तरी ब्राह्मी लिपि के रूप में किया जाता था। सिद्धम या सिधम्म शब्द की उत्पत्ति के बारे में एक मत प्रचलित है कि संस्कृतपरम्परा के अनुसार कुछ भी लिखने से पहले 'सिद्धरस्तु' लिखा जाता है, जिसका अभिप्राय है- सिद्धि को प्राप्त हो। इसी सिद्ध से सिद्धम या सिधम्म शब्द की उत्पत्ति मानी जाती है। इस प्रकार यह लिपि जापानी बौद्धों द्वारा मन्त्र और धारणा लिखने के लिए प्रिय लेखन शैली बन गई, जो आज तक प्रयोग में है।

जापान में उपलब्ध संस्कृत पाण्डुलिपियाँ-

संस्कृत पाण्डुलिपियाँ बौद्ध दर्शन, कला और विचार के प्रचार तथा प्रसार के साथ भारत की सीमाओं को पार कर मध्य एशिया और चीन के रास्ते जापान पहुँचीं। जापान की कोथाइनिज, खोतानी, तोखारियन, उइगुर और सोग्डियन आदि जैसे कई भाषाओं में हजारों संस्कृत पाण्डुलिपियों का अनुवाद हुआ है। जापान में पाई जाने वाली संस्कृत पाण्डुलिपियाँ भारत में पाई जाने वाली पाण्डुलिपियों से बहुत पुरानी हैं। हस्तलिखित सूत्रों तथा ताड़पत्रों पर लिखी गई उष्णीसविजय-धारणी और प्रज्ञापारमिता-हृदय-सूत्र को आज भी जापान के पुस्तकालयों में सुरक्षित रखा गया है,

¹ sixty years of Sanskrit studies vol.2 page-181-182, Sanskrit studies in Japan, Shashibala, विश्व पटल पर संस्कृत साहित्य, डॉ० देशराज, पृ. २०८

² sixty years of Sanskrit studies vol.2 page-188-190, Sanskrit studies in Japan, Shashibala, विश्व पटल पर संस्कृत साहित्य, डॉ० देशराज, पृ. २०९

इन सूत्रों का समय ५२० ई. के आस-पास माना जाता है। इन पाण्डुलिपियों में प्रयुक्त सामग्री, तकनीकें तथा लेखनशैली, भारत में बाद में भी प्रयुक्त की गई पाण्डुलिपियों से मिलती जुलती हैं। प्रज्ञापारमिता-हृदय-सूत्र की पाण्डुलिपि का अठारहवीं शताब्दी में जिउन सोनजा(Jiun Sonja) द्वारा पुनः मुद्रण किया गया था। अपरिमितायुर-धारणी, अभिधर्मकोश-व्याख्या, अभिधर्मोत्तरोत्तर-तन्त्र तथा सहस्रिका-प्रज्ञापारमिता-सूत्र आदि संस्कृत पाण्डुलिपियाँ जापान के क्योटो विश्वविद्यालय के साहित्यिक संकाय में संरक्षित हैं।³

जापानी साहित्य में संस्कृत के प्रभाव के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं-

१. बौद्ध साहित्य-

जापान में बौद्ध धर्म का प्रभाव अत्यधिक रहा है। यह बौद्ध धर्म मध्य एशिया और चीन होते हुये जापान में पहुंचा। जापान में बौद्ध धर्म के आगमन के साथ ही संस्कृत बौद्ध साहित्य का अनुवाद जापानी में हुआ। जापानी में बौद्ध साहित्य का अनुवाद एक महत्वपूर्ण कार्य था, जिसने जापानी संस्कृति और धर्म पर गहरा प्रभाव डाला। यह अनुवाद कार्य कई शताब्दियों तक चला और इसमें कई जापानी विद्वानों और अनुवादकों ने भाग लिया।

जापानी में बौद्ध साहित्य का अनुवाद करने वाले प्रमुख विद्वानों में से हैं-

१. कुकाई या कोबो दाइशी (७७४-८३५ ईस्वी)- कुकाई एक जापानी बौद्ध भिक्षु, सुलेखक और कवि थे, जिन्होंने जापान में शिंगोन बौद्ध धर्म की स्थापना की थी। इन्होंने चीन से जापान में बौद्ध साहित्य का अनुवाद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।⁴

२. शिन्नान (११७३-१२६३ ईस्वी)- ये एक जापानी बौद्ध दार्शनिक तथा शिक्षक थे। इन्हें जापान में बौद्ध धर्म के संस्थापक के रूप में जाना जाता था।

जापानी में बौद्ध साहित्य का अनुवाद करने के लिए कई महत्वपूर्ण ग्रन्थों का उपयोग किया गया, जिनमें से कुछ प्रमुख हैं-

१. त्रिपिटक- त्रिपिटक बौद्ध धर्म का एक प्रमुख ग्रन्थ है, जिसमें बुद्ध के उपदेशों और जीवन की कहानियों का वर्णन है।

२. महायान सूत्र- महायान सूत्र भी बौद्ध धर्म का एक प्रमुख ग्रन्थ है, जिसमें बुद्ध के उपदेशों और महायान बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों का वर्णन है।

३. प्रज्ञापारमिता सूत्र- प्रज्ञापारमिता सूत्र बौद्ध धर्म का एक प्रमुख ग्रन्थ है, जिसमें बुद्ध के उपदेशों और प्रज्ञापारमिता के सिद्धांतों का वर्णन है।

³ विश्व पटल पर संस्कृत साहित्य, डॉ० देशराज, पृ. २०८-२०९

⁴ <https://www.worldhistory.org/Kukai/>

जापानी में बौद्ध साहित्य का अनुवाद करने से जापानी संस्कृति और धर्म पर गहरा प्रभाव पड़ा। यह अनुवाद कार्य जापानी लोगों को बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों और उपदेशों को समझने में मदद किया और जापानी संस्कृति में बौद्ध धर्म को मजबूत किया।

२. कथा साहित्य^५:-

पंचतंत्र का दूसरी बार जापानी में अनुवाद ओ.तनाका और के.कामिमुरा द्वारा इसके टेक्स्टस सिम्पलिसियर से किया गया था, यह पुस्तक १९८० ई. में 'अजिया नो मिनवा' (एशियाई लोक-कथा शृंखला) नामक शृंखला में इसके बारहवें खण्ड के रूप में प्रकाशित हुई थी। ओ. तनाका ने ही सुकसमति (pp. viii + ३६८, टोक्यो, १९६३) और दशकुमारचरित (pp. २४३, टोक्यो, १९६६) जैसे कथा साहित्यों को अनुवाद किया है।

के. कामिमुरा ने १९७८ ई. में कथासरित्सागर के वेतालपञ्चविंशतिका (pp. iv+३१६) के संस्करण का एक जापानी अनुवाद प्रकाशित की। इन्होंने कई महत्वपूर्ण संस्कृत ग्रन्थों का भी अनुवाद किया है, जैसे- कामसूत्र (१९४९), मृच्छकटिका (१९५९), सद्धर्मपुण्डरिकासूत्र (१९६७), कई उपनिषदें (१९६७) इत्यादि।

३. दर्शन^६:-

जापानी दर्शन में संस्कृत के कई शब्दों और अवधारणाओं का उपयोग हुआ है। जापानी दर्शनकारों ने संस्कृत दर्शन को अपनाया और उसे जापानी संदर्भ में अनुकूलित किया। शंकर के ब्रह्मसूत्र-भाष्य का सम्पूर्ण जापानी अनुवाद वाई.कनकुरा (Y. KANAKURA) द्वारा तैयार करने की प्रक्रिया में है और इसका पहला भाग १९८० ई. में शंकर नो तेत्सुगाकु (Shankara no TETSUGAKU) या 'शंकर का दर्शन' शीर्षक के साथ प्रकाशित हुआ था। शंकर पर एक और महत्वपूर्ण कार्य १९७९ ई. में एस. मायेदा (S. Mayeda) द्वारा प्रकाशित किया गया था।

सांख्य दर्शन जापानी विद्वानों के बीच विशेष ध्यान आकर्षित कर रहा है। ई.यामागुची (E. Yamaguchi) ने सांख्य तेत्सुगाकु ताइकेई नो तेनकाई (दर्शनशास्त्र की सांख्य प्रणाली का विकास, पृ.७६०, १९७४) नामक पुस्तक प्रकाशित किए हैं। एस. मुराकामी (S. Murakami) ने 'सांख्य तेत्सुगाकु केनक्यू' (सांख्य दर्शनशास्त्र पर अध्ययन, पृ.७९४, १९७८) नामक पुस्तक प्रकाशित किए हैं।

एम.होण्डा (M. Honda) ने व्यास के योगसूत्रभाष्य पर १९७८ ई. में 'योग-शो-चूकाई' (पृ.२८५) नामक शीर्षक से एक जापानी अनुवाद प्रकाशित किया था।

न्याय-वैशेषिक के क्षेत्र में एच. नाकामुरा (H. Nakamura) ने १९७९ ई. में 'वैशेषिक गकुहा नो गेंटेन' नामक एक प्रबन्ध(लेख) प्रकाशित किया। इस प्रबन्ध (लेख) में उन्होंने "वैशेषिक-सूत्र" (पृष्ठ १-१५६) और "पदार्थ-धर्म-संग्रह" (पृ.१५७-३१६) का एक व्याख्यात्मक जापानी अनुवाद प्रस्तुत किया। इसके अलावा, ए. यूनो (A. Uno) ने १९८० ई.

^५ Sanskrit studies outside India, fifth world conference, 21-26 October, 1981, page-62-63, Japan, Minoru hara

^६ Sanskrit studies outside India, fifth world conference, 21-26 October, 1981, page-62-63, Japan, Minoru hara

में 'शोरी कात्सुरोन-गाकुसेत्सु-केनक्यू' (studies on Nyaya-VAISESIKA philosophy p-११७) शीर्षक के तहत अपनी दीपिका के साथ तर्कसंग्रह का एक व्याख्यात्मक जापानी अनुवाद प्रस्तुत किया।

जापान में संस्कृत अध्ययन केन्द्र-

जापान में संस्कृत अध्ययन केन्द्र की एक समृद्ध परम्परा दृष्टिगोचर होती है, जो पिछली चौदह शताब्दियों से चली आ रही है। प्रो. हाजी-मे-नाका-मुरा के अनुसार भारत को छोड़कर विश्व के सभी देशों में से सबसे अधिक जापान देश में ही संस्कृत अध्ययन-अध्यापन की एक समृद्ध परम्परा रही है। एक बढ़ी संख्या में यहां के विद्यार्थी संस्कृत पढ़ रहे हैं।⁷

टोक्यो के इम्पीरियल विश्वविद्यालय में संस्कृत के अध्यक्ष दिवंगत प्रोफेसर जे. ताकाकुसु के उत्तराधिकारी के रूप में थे, उन्होंने जापान में संस्कृत और भारतीय अध्ययन को बढ़ाने और वैदिक अध्ययन में अन्तर्राष्ट्रीय छात्रवृत्ति के विकास में बहुत योगदान दिया था।⁸

मिज़ुहो भारत जापान अध्ययन केन्द्र- यह भारतीय प्रबंध संस्थान बेंगलोर में स्थित है, जो भारत और जापान के बीच शैक्षिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देता है।⁹

जापान के क्योटो विश्वविद्यालय में 'संस्कृत लैंग्वेज एण्ड लिटरेचर' नाम से एक विभाग है, संस्कृत के अध्ययन-अध्यापन कार्य इस विभाग द्वारा सम्पादित किया जाता है। स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों को उपाधियां भी इस विभाग द्वारा प्रदान की जाती हैं। शोधकार्य(अनुसन्धान कार्य) में यह विभाग अग्रगण्य हैं, यहां वेद, दर्शन, साहित्य तथा शास्त्रीय संस्कृत इत्यादि विषयों पर अनुसन्धान के कार्य की सुविधाएं उपलब्ध हैं। इस विभाग के कुछ अध्यापन रत उल्लेखनीय विद्वद्गण्डली के नाम हैं-प्रो०टोकून्गा मुनियो, यागी तोरो, मिजोकामी टोमियो, प्रो० ईकारी यासुकि, कानो क्यो आदि। प्रो० टोकून्गा ने पुराणों तथा ऋग्वेदिक परम्पराओं पर आधारित ग्रन्थ बृहद्देवता को संस्कृत में रचित किया। एसोशिएटेड प्रो० योकोचि और क्नोचल नामक दो विद्वानों ने क्रमशः पुराण और संस्कृत साहित्य एवं वैदिक साहित्य पर गवेषणात्मक कार्य कर रहे हैं।¹⁰ डॉ. युको योकोची वर्तमान में संस्कृत साहित्य की प्रोफेसर हैं और क्योटो विश्वविद्यालय में ग्रेजुएट स्कूल ऑफ लेटर्स और फैकल्टी ऑफ लेटर्स (Graduate School of Letters and Faculty of Letters) में इंडोलॉजिकल स्टडीज विभाग की प्रमुख हैं।

निष्कर्ष-

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि जापान में संस्कृत का अत्यन्त गहरा प्रभाव रहा है। जापान की भाषा, संस्कृति, कला, दर्शन और साहित्य पर संस्कृत की छाप स्पष्टरूप से दृष्टिगोचर होती है। जापान में संस्कृत को सम्मानजनक

⁷ <https://www.pravakta.com/japan-to-study-sanskrit-in-the-tradition-of-teaching-akhand-bharat/>,

<https://www.ugtabharat.com/4395/>

⁸ Sanskrit studies outside India, fifth world conference, 21-26 October, 1981, page-61-63, Japan, Minoru hara, sixty years of Sanskrit studies vol.2 page-188-190, Sanskrit studies in Japan, Shashibala

⁹ <https://www.iimb.ac.in/centres-of-excellence/mijsc>

¹⁰ <https://narayanduttmishra.blogspot.com/2011/03/blog-post.html?m=1>

दृष्टिकोण से देखा जाता है। जापान के विश्वविद्यालयों के संस्कृत विभागों के पुस्तकालयों में आज भी संस्कृत पाण्डुलिपियां सम्यकरूपेण संरक्षित हैं। संस्कृत का अध्ययन-अध्यापन के लिये जापान में अनेक संस्कृत अध्ययन केन्द्र और विश्वविद्यालय स्थापित किये गये हैं। अनेक जापानी विद्वानों द्वारा संस्कृत के ग्रन्थों का जापानी भाषा में अनुवाद कार्य मुख्य रूप से सम्पादन हुआ है। संस्कृत अध्ययन केन्द्र में संस्कृत के विविध ग्रन्थों पर गवेषणात्मक कार्य हो रहे हैं। वर्तमान में भी जापान के विश्वविद्यालयों में संस्कृत का अध्ययन-अध्यापन कार्य चलायमान है। इस प्रकार जापान के विभिन्न प्रान्तों को एक साथ मिलाने तथा एकात्मक संस्कृति के निर्माण में संस्कृत का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। इस प्रकार संस्कृत ने जापानी भाषा, संस्कृति, कला और साहित्य पर अपनी अमिट छाप छोड़ी। जापान में संस्कृत का प्रभाव इस विषय पर इस प्रकार के विवेचन स्पष्टरूपेण ग्रहणयोग्य और यथार्थ है।

सन्दर्भग्रन्थसूची-

विश्व पटल पर संस्कृत साहित्य, डॉ. देशराज, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, २०२२ प्रथम संस्करण

दक्षिण-पूर्वी और दक्षिणी एशिया में भारतीय संस्कृति, सत्यकेतु विद्यालंकार, श्री सरस्वती सदन, ए-१/३२, सफदरगंज इन्क्लेव, नई दिल्ली, १९९१

Sanskrit in China and Japan, Saroj Kumar Chaudhuri, Aditya Prakashan, Delhi 2011

SIDDHAM: an essay on the history of Sanskrit studies in China and Japan, R.H. van Gulik

SIDDHAM in China and Japan, Saroj Kumar Chaudhuri, SINO-PLATONIC PAPERS, number 88, December, 1998

‘वैश्विक परिप्रेक्ष्य में संस्कृत’ विशिष्ट व्याख्यानमाला (स्वरमंगला पत्रिका), डॉ० हरिदत्त शर्मा, राजस्थान संस्कृत अकादमी

विश्वपटले संस्कृत, स्वरमंगला पत्रिका (त्रैमासिकी संस्कृत शोध पत्रिका), डॉ० श्री कृष्णशर्मा (सम्पादक), राजस्थान संस्कृत अकादमी, अक्टूबर-दिसम्बर २०१३।

<https://www.arshavidya.in>>Vedanta and Sanskrit classes in Japan

Sanskrit in Japan, prof. (Dr) Shashi Bala

Sanskrit studies outside India, 1979-1981, Fifth world Sanskrit conference Varanasi, India: October 21-26, 1981, RASHTRIYA SANSKRIT SANSTHAN, Delhi 1981

Mishra, K.K, (1997), **Sanskrit studies outside India** (On the occasion of 10th world Sanskrit conference, Bangalore, Jan.3-9, 1997), New Delhi RASHTRIYA SANSKRIT SANSTHAN.

Sanskrit studies Abroad, edited by prof. Vachaspati Upadhyaya, Shri Lal Bahadur shastri Rashtriya Sanskrit Vidyapeetha, New Delhi विश्वसंस्कृतसम्मेलनम् world Sanskrit conference, 5-9 April, 2001, Vigyan Bhawan, New Delhi

Tripathi, R., (2012), **sixty years of Sanskrit studies (1950-2010): countries other than India**, vol.2, Delhi, D. k. Print-world (p) ltd